



SHRI DOMAR SINGH KUNVAR

Shri Domar Singh Kunwar is a renowned Natya Nacha folk dance artist who dedicated his life in preserving the tradition, for over 5 decades. He has performed plays in 13 dialects & languages. Through his plays, he has spread awareness about eradicating superstition and social evils like child marriage.

2. Born on January 13, 1947 in Latabod village of Chhattisgarh Shri Kunwar completed his higher secondary education in 1962. He formed Mayaru Mor Latabod Loknacha in 1966 after getting Nacha art education in 1960 from his father and Guru. He entered as Kalajatha Director in 1991 and gave stage performances in cities and metropolitan cities like Delhi, Kolkata, Nagpur etc. He formed many Kalajathas and imparted training.

3. Shri Kunwar gave more than 10,000 stage and street performances in many villages, towns and cities of India. He worked for making Durg district fully literate in 2002 and in eradication of leprosy, diarrhoea, malaria etc. He worked for better health environment, vaccination, pure drinking water, sanitation, house to house toilets etc. Through his 100 songs and 60 plays, he has spread awareness across villages and cities for child marriage prevention and many more mythological and social evils. This awakening is continued through his Nacha Gammat performances

4. Shri Kunwar has been honoured with many awards. He was first honoured by District Literacy Committee, Durg in 1991. Other honours conferred on him are Kala V Natya Samata National Award by Sahitya Mumbai in 2022; Barhapali Nishad Lok Samman in 2003; Scheduled Caste Development Council Gyan Peeth Shri Samman in 2011; Bhuiyan Samman in 2008; Dau Mandraji Award by Sutradhar Sanstha in 2002; Leprosy Eradication (DENLEP) in 1998; Lokkala Shikhar Samman Indian Dalit Literature Adak, Chhattisgarh in 2013; Dharti Putra Samman; Chhattisgarh Mati Putra Samman etc.



श्री डोमार सिंह कुँवर

श्री डोमार सिंह कुँवर नाट्य नाच लोक नृत्य के प्रसिद्ध कलाकार हैं, जिन्होंने 5 दशक से अधिक समय तक इस परंपरा को बनाए रखने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने 13 बोलियों और भाषाओं में नाटकों का मंचन किया है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से अंधविश्वास और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के बारे में जागरूकता फैलाई है।

2. 13 जनवरी, 1947 को छत्तीसगढ़ के लताबोड़ गांव में जन्मे, श्री कुँवर ने 1962 में अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी की। उन्होंने अपने पिता और गुरु से 1960 में नाच कला सीखने करने के बाद, 1966 में मयारु मोर लताबोड़ लोक नाच का गठन किया। उन्होंने 1991 में कलाजत्था निदेशक के रूप में कार्य करना शुरू किया और दिल्ली, कोलकाता, नागपुर आदि जैसे शहरों और महानगरों में मंच प्रदर्शन किए। उन्होंने बहुत से कलाजत्थे बनाए और प्रशिक्षण दिया।

3. श्री कुँवर ने भारत के कई गांवों, कस्बों और शहरों में 10,000 से अधिक मंच और नुक्कड़ प्रस्तुतियां दी। उन्होंने 2002 में दुर्ग जिले को पूर्ण साक्षर बनाने और कुष्ठ, दस्त, मलेरिया आदि के उन्मूलन के लिए काम किया। उन्होंने बेहतर स्वास्थ्य वातावरण, टीकाकरण, शुद्ध पेयजल, स्वच्छता, घर-घर शौचालय आदि के लिए कार्य किया। अपने 100 गीतों और 60 नाटकों के माध्यम से उन्होंने बाल विवाह पर रोकथाम तथा अनेक पुरानी और सामाजिक बुराइयों के लिए गांवों और शहरों में जागरूकता का प्रसार किया। यह जन-जागरण उनके नाच गम्मत प्रदर्शन के माध्यम से अभी भी किया जा रहा है।

4. श्री कुँवर को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें पहली बार 1991 में जिला साक्षरता समिति, दुर्ग द्वारा सम्मानित किया गया था। उन्हें प्रदान किए गए अन्य सम्मान 2022 में साहित्य मुंबई द्वारा कला वी नाट्य समता राष्ट्रीय पुरस्कार; 2003 में बरहापाली निषाद लोक सम्मान; 2011 में अनुसूचित जाति विकास परिषद ज्ञान पीठ श्री सम्मान; 2008 में भुइयां सम्मान; 2002 में सूत्रधार संस्था द्वारा दाऊमंदराजी पुरस्कार; 1998 में कुष्ठ उन्मूलन; 2013 में लोककला शिखर सम्मान भारतीय दलित साहित्य अदक, छत्तीसगढ़; धरती पुत्र सम्मान; छत्तीसगढ़ माटी पुत्र सम्मान आदि शामिल हैं।